''सौराठ सभा, मैथिल समाज और आर्थिक जीवन (1800–2000) ई0''

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा–846004

के

सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास)

में

पी–एच0डी0 शोध हेतु प्रस्तुत

प्रस्तावित शोध–प्रबंध की रूपरेखा

2021-2022

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 अमिताभ कुमार,
सहायक प्राध्यापक,
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,
ल0ना0मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा
मो0नं0–9691302019

शोध प्रज्ञा

सोनी कुमारी
ग्राम+पोस्ट–घोघरडीहा,
जिला–मधुबनी
मो0नं0–7903731268

''सौराठ सभा, मैथिल समाज और आर्थिक जीवन (1800–2000) ई0''

प्रस्तावना (Statement of the problem) :–

प्राचीन काल से ही मिथिला का क्षेत्र संपूर्ण भारतवर्ष में अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परंपरा के लिए विख्यात है। मिथिला क्षेत्र के प्रारंभिक इतिहास की जानकारी हमें कई प्राचीन धर्मग्रंथों में मिलती है, जिसमें विष्णु–पुराण, शतपथ ब्राह्मण तथा रामायण प्रमुख है। वृहद्विष्णुपुराण में मिथिला की सीमा का स्पष्ट उल्लेख करते हुए कहा गया है कि :–

कौशिकीन्तु समारभ्य गण्डकीमधिगम्यवै।
योजनानि चतुर्विंश व्यायामः परिकीर्त्तितः।।
गंगा प्रवाह मारभ्य यावध्दैभवतम्वनम।
विस्तारः षेडशप्रोक्तो देशस्य कुलनंदन।।

अतः पूर्व में कोसी से आरंभ होकर पश्चिम में गंडकी तक 24 योजन तथा दक्षिण में गंगा नदी से आरंभ होकर उत्तर में हिमालय वन (तराई प्रदेश) तक 16 योजन मिथिला का विस्तार है। मिथिलांचल क्षेत्र के मधुबनी जिला के अंतर्गत सौराठ नाम का एक ग्राम है जो जिला मुख्यालय से 6 किमी उत्तर–पूर्व में स्थित है। गाँव में सदियों से एक सभा का आयोजन किया जा रहा है; जिसका प्रारंभिक साक्ष्य 14वीं सदी से मिलता है। यह सभा विवाह संस्कार को पंजीकृत करने से संबंधित है। इस सभा के क्षेत्र में जहाँ लोग विवाह संबंध जोड़ने के लिए इकट्ठे होते थे, कई प्रकार के वृक्ष लगे थे जैसे कि पीपल, बरगद, पाकड़ और आम आदि का, इस कारण यह क्षेत्र सभा गाछी नाम से भी प्रसिद्ध था।

सौराठ सभा मैथिल ब्राह्मणों की अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था थी, जिससे सामुदायिक एकता, विवाह का सामाजिक महत्व, सांस्कृतिक परंपरा और सामाजिक सहयोग की रूपरेखा परिलक्षित होती है। सभा का आयोजन नक्षत्रीय गणना के कारण अषाढ़ में शुरू होता था। इसमें मिथिला प्रदेश के सभी क्षेत्र के ब्राह्मण शामिल होते थे। अधिकांश विद्वानों का मत है कि सभा द्वारा राज्य के अंदर ही वैवाहिक संबंध स्थापित किया जाता था। सभा में अभिन्न अंग के रूप में घटक पेशेवर विवाह वार्ताकार की तरह वर–कन्या के बीच वैवाहिक संबंध जोड़ने में मध्यस्थ की भूमिका निभाते थे। पंजीयार और घटक सभा के अभिन्न अंग थे और सभा से उन्हें साल भर का जीविकोपार्जन होता था। वहाँ स्थानीय युवक और मजदूर से लेकर व्यापारियों को भी कारोबार करने का मौका मिलता था। ''संस्कृति वास्तव में मानवता का गर्भ विस्तार करने का प्रयास है।'' क्रिस्टोफर डाउसन (अंग्रेजी कैथोलिक इतिहासकार) की यह पंक्ति मिथिला के सांस्कृतिक इतिहास में सौराठ सभा की भूमिका को सार्थक सिद्ध करती है। वैवाहिक संस्था वैश्विक समाज का एक अभिन्न अंग है। सौराठ सभा ने अपने विशेष पंजीकरण व्यवस्था द्वारा इस वैवाहिक संस्था को अद्वितीय रूप से संगठित करने का प्रयास किया है।

विशेष विवाह अधिनियम 1954 की धारा 4 में एक महत्वपूर्ण बिंदु का समावेश किया गया है जिसमें कहा गया है कि विवाह में शामिल होने वाले पक्षों को एक–दूसरे के साथ निषिद्ध रक्त संबंध में नहीं होना चाहिए। यह कई स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म देती है जैसे कि आनुवांशिक विकारों का बढ़ता जोखिम और सीमित आनुवांशिक विविधता के खतरे को पैदा करती है। मिथिला क्षेत्र में इस निषिद्ध रक्त परंपरा को प्राचीन काल से ही व्यवहारिक रूप मिला

हुआ था किंतु इसको साहित्यिक रूप से संरक्षित करने का प्रयास 14वीं सदी से आरंभ हुआ। विद्वानों के अनुसार मिथिला के कर्नाटवंश के राजा हरिसिंह देव ने रक्त शुद्धता को ध्यान में रखते हुए विवाह संस्कार के पंजीकरण की नींव डाली। मैथिल ब्राह्मण एवं कायस्थ परिवार के वंशावलियों को पंजीकृत करने के लिए पंजीकारों का संघ बनाया गया। राजा हरिसिंह देव ने अनिवार्य रूप से दोनों वैवाहिक पक्ष को प्रमाण पत्र रखने के निर्देश दिए थे कि वे निकट संबंधी नहीं है। पंजी प्रथा व्यवस्था ने एक नए सामाजिक वर्ग को जन्म दिया जिन्हें पंजीयार और घटक से संबोधित किया जाने लगा। इनका मुख्य कार्य वंशावलियों की सुरक्षित पंजी बनाना था तथा वर एवं कन्या पक्ष के सभी जानकारियों को पंजीकृत करना था। सौराठ सभा के पंजीकरण प्रथा में महिला की स्थिति को सुरक्षा प्रदान की। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की कन्याओं का विवाह भी योग्य वर के साथ कराना आसान हो पाया। बहुत सारे गाँवो के पंजीकार अपनी पंजी पुस्तिका लेकर सौराठ सभा में बैठते थे। धीरे–धीरे उनलोगों ने वहीं बसना शुरू कर दिया। कुछ पंजीकारों के वंशज अभी भी गाँव में निवास करते है। महामहोपाध्याय परमेश्वर झा के अनुसार खंडवाल राजा राघव सिंह (1703–1739 ई0) ने सभा को समौल गाँव (मधुबनी) के नजदीक आयोजित कराने का प्रयास किया। पंजीकारों द्वारा सिद्धांत पत्र दिया जाता था जो ताड़ पत्र पर लिखे होते थे, जो इस बात का प्रमाण होता था कि दोनों पक्षों के बीच सात पुस्तों से कोई रक्त संबंध नहीं है।

मिथिला क्षेत्र में दिल्ली सल्तनत के शासकों ने क्षेत्रीय वंश के राजाओं को पराजित कर इस्लामी परंपरा को इस क्षेत्र में लाने का प्रयास किया। मोहम्मद बिन तुगलक ने तिरहुत का नाम बदलकर तुगलकपुर रखा। फिरोजशाह के समय

में तिरहुत क्षेत्र में ओइनवार–वंशीय कामेश्वर ठाकुर का शासन स्थापित हुआ। इन सभी उथल–पुथल के बावजूद मिथिलावासी अपने प्राचीन वैवाहिक परंपरा को बनाए रखने का प्रयास किया। पंजी प्रबंध प्रथा के कठोरता से पालन कराने के परिणामस्वरूप कुलीनवाद का उदय हुआ जिसने मिथिला के सामाजिक संरचना में एक नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न किया। कुलीनवाद के नाम पर बाल–विवाह और बहुविवाह को बढ़ावा दिया जाने लगा। पंजी व्यवस्था ने ब्राह्मणों में कई उपवर्ग बना दिए :–

- श्रोत्रिय या सोति
- जोग या योग्य
- पंजीबद्ध
- जयबारा
- नागार

इस समय दूसरे क्षेत्र के ब्राह्मण भी मिथिला के क्षेत्र में आकर बसने लगे। पंजी प्रथा के द्वारा मैथिल ब्राह्मणों ने बाहरी ब्राह्मणों के उपर अपनी श्रेष्ठता बनाए रखने का प्रयास किया। इससे सामाजिक जटिलता उत्पन्न हुई।

विवाहों के पंजीकरण का मुख्य उद्देश्य वैवाहिक संबंध में रक्त शुद्धता को सुरक्षित रखना था। शास्त्रों के अनुसार एक कन्या को मातृपक्ष से पाँचवें वंशज के बाद और पितृ पक्ष से छठे वंशज के बाद विवाह करने की अनुमति है। यह जानकारी पंजीकारों के वर्ग द्वारा पंजीकृत कर रखा जाता था।

सौराठ सभा में पंजीकारों के निर्णय के अनुसार गोत्र–मूल और कूल के आधार पर मैथिल वर–वधुओं का विवाह संबंध तय किया जाता था। कन्या के अनुरूप वरों की खोज एवं पंजीकारों की सुलभता सौराठ सभा की खासियत थी।

सौराठ सभा का विवरण परमेश्वर झा ने ''मिथिला तत्व विमर्श'' में, श्री इन्द्र नारायण झा ने ''मिथिला दिग्दर्शन'' में, श्री राम प्रकाश शर्मा ने ''मिथिला के इतिहास'' में प्रस्तूत किया है।

एलेक्जेंडर कनिंघम, जिन्हें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के जनक के रूप में भी जाना जाता है, 19वीं सदी के 8वें दशक में सौराठ सभा की यात्रा की थी, यहाँ उन्होंने राजा शिवसिंह के ताम्रपत्र अभिलेख का अध्ययन किया। इसका विस्तृत वर्णन ''आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया रिपोर्ट'', Vol-XVI, 1880–1881 में किया गया है।

सौराठ सभा के विवाह परंपरा पर पूर्व में कुछ शोधार्थियों ने शोध किया है, परंतु वस्तुनिष्ठ शोध विषय में इस एतिहासिक एवं धार्मिक स्थल के परंपरा एवं संस्कृति ने मिथिला क्षेत्र को आर्थिक सांस्कृतिक रूप से किस सीमा तक मजबूत किया उसका गहन अध्ययन एवं विश्लेषण की अपेक्षा है। सौराठ सभा के विशेष वैवाहिक परंपरा तथा पंजी व्यवस्था के विकास तथा पतन के कारणों पर भी ध्यान केंद्रित रहेगा।

सोमनाथ तथा माधवेश्वरनाथ मंदिर ने सौराठ सभा को धार्मिक महत्व प्रदान किया है, जिसका क्षेत्रिय संस्कृति के विकास में प्रभावशाली योगदान रहा है। मंदिर अभिलेख से पता चलता है कि माधवेश्वर नाथ मंदिर राजा छत्र सिंह के समय 1832–33 ई0 में पूरा हुआ। सभा परिसर में स्थित मंदिरों में आर्थिक स्थिति को प्रभावित किया इस बिंदु को विश्लेषित करने का विनम्र प्रयास किया जाएगा।

पूर्व अध्ययन (Review of the Literature) :–

किसी भी क्षेत्र की जीवन शैली इसके भौगोलिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था से अविभाज्य होता है। संस्कृति एवं परंपरा का सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव है। प्रस्तुत शोध विषय सौराठ सभा, मैथिल समाज एवं आर्थिक जीवन में आर्थिक परिप्रेक्ष्य में शोध कार्य किया जाएगा, इस विषय पर उल्लेखनीय कार्य अब तक नहीं किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य को पूरा करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों की सहायता ली जाएगी किंतु आर्थिक दृष्टिकोण के विश्लेषण के लिए इसकी संख्या कम है। इन स्रोतों में उल्लिखित सामाजिक रहन–सहन, खान–पान, परंपरा आदि के अध्ययन से आर्थिक इतिहास को जानने में सहायता मिलती है।

सौराठ सभा का वर्णन कई विद्वानों ने अपने साहित्यों एवं शोधों में किया है। प्रो0 हेतुकर झा ने अपने शोध निबंध "Elite mass contradiction in Mithila in Historical perspective" में जमींदारी व्यवस्था, मैथिल महासभा, परंपरा, आधुनिकता अभिजात्य वर्ग, अर्द्धसामंतवाद एवं धार्मिक मतवाद का उल्लेख किया है किंतु आर्थिक इतिहास का वर्णन न्यूनतम है।

प्रो0 तंत्रनाथ झा द्वारा लिखित संस्मरण सभा–गाछी में पंजीकारों द्वारा सिद्धांत लिखने की प्रक्रिया का वर्णन है, किंतु पंजीकारों के आय के स्रोत का विस्तृत वर्णन उपेक्षित है। प्रो0 हरिमोहन झा ने अपने उपन्यास कन्यादान में सौराठ सभा का सामाजिक वर्णन किया है इस सभा में आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की लड़कियों का विवाह भी अच्छे घरों में सम्पन्न करवाया जाता था। सभा की मुख्य विशेषता थी यहाँ बिना दहेज के विवाह को प्रोत्साहन मिलता था। इस प्रथा ने समाज की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया।

उपेन्द्र ठाकुर ने अपनी पुस्तक Aspects of Society and Economy of Medical Mithila में मिथिला के सामंतवादी व्यवस्था का वर्णन किया है। इसमें उन्होंने लिखा है विभिन्न वर्गों के जीवन स्तर भिन्न थे उनमें अंतर काफी अधिक था। प्रस्तुत शोध प्रबंध में विभिन्न वर्गों के आर्थिक स्थिति का अवलोकन किया जाएगा तथा इसके कारणों की खोज की जाएगी। मिथिला भारतीय शोध पत्रिका में प्रो0 रमानाथ झा ने पंजी व्यवस्था, वैवाहिक परंपरा एवं सौराठ सभा का विस्तृत वर्णन किया है।

कृष्ण कुमार झा द्वारा लिखित मिथिला का सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन तथा उमेश मिश्र द्वारा लिखित मिथिलाक संस्कृति ओ सभ्यता में भी सौराठ सभा का उदभव एवं विकास पर प्रकाश डाला गया है परंतु क्षेत्र विशेष में अध्ययन हेतु पर्याप्त नहीं है।

प्रस्तुत शोध में सौराठ सभा का क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में योगदान क्या था इसका मुल्यांकन कर मैथिल समाज को एक नए दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया जाएगा। सौराठ सभा का आर्थिक विश्लेषण क्षेत्र में सामाजिक एवं भौगोलिक इतिहास की परिधि को विस्तार देगा।

अध्ययन का उद्देश्य, महत्व एवं प्रासंगिकता(Aims, Object and Relevance):–

मिथिला क्षेत्र का प्रसिद्ध ग्राम सौराठ अपने विशेष परंपरा और संस्कृति के लिए विख्यात है। सदियों से यहाँ एक ब्राह्मणों की सभा आयोजित की जा रही थी, विद्वानों के अनुसार यहाँ एक लाख ब्राह्मण उपस्थित होते थे। वर्तमान में इस सभा की प्रासंगिकता समाप्त हो चुकी है किंतु क्षेत्र के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण अध्याय है। प्रस्तुत शोध कार्य में मैथिल समाज, विवाह–प्रणाली और उसकी प्रासंगिकता का अध्ययन किया जाएगा। सौराठ सभा में पंजीकारों के संघ

तथा इसके संचालन में लगे अन्य लोगों के अर्थोपार्जन का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाएगा। सौराठ सभा के पंजी प्रथा द्वारा मैथिल समाज पर अनुकूल एवं प्रतिकूल प्रभाव को रेखांकित किया जाएगा। सौराठ क्षेत्र के विशेष वैवाहिक परंपरा का सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में शोधकार्य किया जाएगा। अंत में पंजी व्यवस्था तथा सौराठ विवाह सम्मेलन के पतन के कारणों को खोजने का प्रयास कर इसके प्रभावों का आकलन किया जाएगा।

ज्ञान क्षेत्र में योगदान (Contribution in the field of knowledge) :–

सौराठ सभा एवं पंजी व्यवस्था का मिथिला क्षेत्र के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। सौराठ सभा ने मिथिला क्षेत्र के संस्कृति में एक स्वर्णिम अध्याय को जोड़ा है। इस सभा के संचालन द्वारा क्षेत्र में अर्थोपार्जन के कई नए राह खुले, क्षेत्र के लोगों ने अपनी परंपरा और सामाजिक व्यवस्था को सुरक्षित रखते हुए विकास के कई अवसर प्राप्त किए। प्रस्तुत शोध कार्य द्वारा सौराठ सभा के परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रिय इतिहास के योगदान का विश्लेषण किया जाएगा।

अध्ययन क्षेत्र (Scope of the study) :–

मिथिला का इतिहास विभिन्न परंपराओं एवं शिक्षाओं से परिपूर्ण है। विभिन्न प्राचीन धर्मग्रंथों में मिथिला का इतिहास उल्लेखित है। वैदिक ग्रंथ, सूत्र, उपनिषद, रामायण, पूराणों में इसके उदभव का इतिहास है। प्रस्तुत शोध में मिथिला के सौराठ सभा का सांस्कृतिक एवं आर्थिक अवलोकन किया जाएगा। सौराठ सभा का विशेष पंजी प्रथा सामाजिक व्यवस्था की अनिवार्य परंपरा थी, उसके अध्ययन का प्रयास किया जाएगा।

अध्ययन पद्धति (Methodology) :–

प्रस्तुत अध्ययन 1800–2000 ई0 के कालखंड पर आधारित होगा। वस्तुनिष्ठ शोध में पंजी प्रथा, पंजीकारों के अभिलेख, आस्वजन पत्र आदि का अध्ययन किया जाएगा। प्रस्तुत शोध विश्लेषण एवं संश्लेषण विधि पर आधारित होगा। अन्य विधियाँ पूरक के रूप में प्रयोग की जाएगी। शोध कार्य के प्रथम चरण में विभिन्न पुस्तकालयों में उपलब्ध अध्ययन सामग्री का अवलोकन किया जाएगा। सरकारी अभिलेख एवं गैर सरकारी संस्थाओं से भी तथ्य एकत्रित करने का प्रयास किया जाएगा। पत्र–पत्रिकाओं, उपन्यास एवं संस्मरण का भी अध्ययन किया जाएगा।

शोध के द्वितीय चरण में स्वतः अवलोकन और साक्षात्कार तकनीकों का उपयोग कर आँकड़ों का संग्रह किया जाएगा। इसके लिए पंजीकारों अर्थशास्त्र के विद्वानों, समाजसेवकों, पत्रकारों तथा ग्रामीणों से संपर्क स्थापित किया जाएगा।

शोध सामग्री की उपलब्धता (Avaibility of the source material) :–

प्रस्तुत शोध में प्रारंभिक एवं द्वितीयक स्रोत का उपयोग किया जाएगा। पंजीकारों के अभिलेख पत्र का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा। पुरातात्विक स्थलों विशेषकर सौराठ सभा गाछी का पर्यवेक्षण कर साक्ष्य इकट्ठे किए जाऐंगे। संबंधित स्थलों के समाजसेवकों, ग्रामीणों, पंजीकारों से संवाद स्थापित कर सभा एवं पंजी व्यवस्था की एतिहासिक जानकारी उपलब्ध की जाएगी।

परिकल्पना (Hypothesis) :–

प्रस्तुत शोध को प्रासंगिक बनाने हेतु निम्नलिखित परिकल्पना की जाँच की जाएगीः–

1. सौराठ सभा ने विवाह संस्था को सामाजिक रूप से प्रासंगिक बनाया है।
2. सौराठ सभा का क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में योगदान।

कार्य योजना (Tentative plan of chapters) :–

प्रथम अध्याय :– प्रस्तावना

दूसरा अध्याय :– सौराठ सभा की एतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि

तीसरा अध्याय :– मिथिला की धार्मिक, सामाजिक परंपरा

चौथा अध्याय :– सौराठ सभा तथा पंजी व्यवस्था

पाँचवा अध्याय :– सौराठ सभा तथा आर्थिक परिदृश्य

छठा अध्याय :– सौराठ सभा का मिथिला के सांस्कृतिक जीवन में योगदान

सातवाँ अध्याय :– निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography) :–

प्राथमिक स्रोत :–

1. ऋग्वेद, गीताप्रेस, गोरखपुर, 1935
2. शतपथ ब्राह्मण, विजय कुमार गोविन्द राम हंसानन्द, 2023
3. महाभारत, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2017
4. विष्णुपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2017
5. मैथिल ब्राह्मणों के वंशावली की हस्तालिखित प्राचीन मूल पंजियाँ।

6. ठाकुर, चण्डेश्वर, ग्रहस्थरत्नाकर, बिल्लियोथिका इंडिका सिरीज, कलकत्ता, 1940
7. ठाकुर, चण्डेश्वर, विवाद रत्नाकर, एशियाटिक सोसाइटी बंगाल, 1965
8. छन्दोग्योपनिषद, गीताप्रेस गोरखपुर, 1931
9. ठाकुर ज्योतिरिश्वर, वर्णरत्नाकर, सन्मार्ग प्रकाशन, 1936

द्वितीयक स्रोत :–

1. अहमद, इजहार – Madhubani Through Ages :- A Regional History of Madhubani, इमेज–इंप्रेशन्स, 2007
2. चौधरी, पी0सी0राय, Bihar District Gazetters Darbhanga, 1964, Digital Library of India Item 2015 . 206891
3. चौधरी, राधा कृष्णा – Select inscriptions of Bihar, एस0 देवी, प्रकाशन, 1958
4. कनिंघम, एलेक्जेण्डर – Archological survey of India, Delhi, 1994
5. ठाकुर, उपेन्द्र, History of Mithila, सुधाकर प्रेस, 1956
6. मिश्र, श्री उमेश, मैथिल संस्कृति और सभ्यता, दरभंगा प्रेस कंपनी (प्रा0) लिमिटेड, 1970
7. चौधरी, इन्दू कुमार, सम आस्पैक्टस ऑफ शोसल लाइफ ऑफ मेडिएवल मिथिला, रिसर्च इंस्टीच्यूट, पटना, 1988
8. शर्मा, श्री राम प्रकाश, मिथिला का इतिहास, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, 2002
9. झा, कृष्ण कुमार, मिथिला का सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन, कोमल प्रकाशन, महेन्द्रू, पटना, 2004

10. चौधरी, राधा कृष्ण, मिथिला सांस्कृतिक इतिहास, वैदेही प्रकाशन, दरभंगा, 1963
11. ग्रियर्सन, सर जार्ज अब्राहम, बिहारक ग्रमजीवन (अनुवाद भीमनाथ झा, श्री मोहन भारद्वाज, श्री धर्म नाथ झा) मैथिली अकादमी, शिवपुरी, पटना, 1980
12. ठाकुर, ज्योतिरिश्वर, वर्णरत्नाकर, सं0 ए0 मिश्रा एवं जी0 झा, मैथिली अकादमी, पटना, 1980
13. झा, डा0 रमानाथ, मैथिल ब्राह्मणों की पंजी व्यवस्था, दरभंगा प्रेस कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, दरभंगा, 1963
14. मिश्र, जे0के0, History of Maithili Literature, भाग–1, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1949
15. राजवाड़े, श्री विश्वनाथ, काशीनाथ, भारतीय विवाह संस्था का इतिहास, वाणी प्रकाशन, 2016
16. झा, प्रो0 हरिमोहन, कन्यादान, राजकमल प्रकाशन, 1942
17. झा, सहदेव, मिथिला की धरोहर
18. ठाकुर, गजेन्द्र, जीनोम मैपिंग–मिथिलाक पंजी प्रबंध, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली, 2021
19. मिश्र, श्री विजय कांत, कल्चरल हेरिटेज ऑफ मिथिला, मिथिला प्रकाशन, 1979
20. झा, श्री उग्रनाथ, दी जिनियोलॉजी एण्ड जिनियोलोजिस्ट ऑफ मिथिला, किशोर विद्या निकेतन, 1980
21. झा, श्री इन्द्र नारायण, मिथिला दिग्दर्शन, हरि अन्नपूर्णा सम्प्रीति प्रकाशन, 2014
22. झा, डॉ0 योगनाथ, पंजी प्रबंध, अंकित प्रकाशन, दरभंगा, 2012

पत्र–पत्रिका :–

23. मिथिला इतिहास विमर्श, मिथिला इतिहास संस्थान दरभंगा, 2008

24. मिथिला भारती, मैथिली साहित्य संस्थान शोध पत्रिका, अंक–3, दिसंबर, 1971

25. जनरल ऑफ दी बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना

26. जनरल ऑफ दी बिहार सोसाइटी

27. Notes in Darbhanga Raj Archives

28. विदेह मैथिली–ई–पत्रिका (गजेन्द्र ठाकुर)

29. सौराठ सभा–इतिहास आ बदलैत स्वरूप (डॉ0 रत्नेश्वर मिश्र)

30. मिथिला मिहिर

31. सौराठ सभा दर्पण

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 अमिताभ कुमार,
सहायक प्राध्यापक,
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,
ल0ना0मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा
मो0नं0–9691302019

शोध प्रज्ञा

सोनी कुमारी
ग्राम+पोस्ट–घोघरडीहा,
जिला–मधुबनी
मो0नं0–7903731268